वन अनुसंधान केन्द्र
हैदराबाद

वन अनुसंधान केन्द्र, हैदराबाद, जुलाई 1997 से काष्ठ विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, बंगलौर के प्रशासनिक नियंत्रण में कार्यरत है। केन्द्र की स्थापना वानिकी क्षेत्र में आंध्र–प्रदेश, कर्नाटक और गोवा की अनुसंधान आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया गया।

वर्ष 2006-2007 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं

परियोजना 1 : आंध्र प्रदेश में पुनरूत्पत्ति पर वनाग्नि के प्रभाव का आकलन [एफ आर सी–एक्स–01/ई बी–01/2002–2007]

उपलब्धियां : वन वनस्पति की प्राकृतिक पुनरूत्पति पर आग के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए आंध्र प्रदेश के दक्षिणी शुष्क पर्णपाती वन किस्मों का प्रतिनिधित्व करते हुए मैन्चीरियल तथा जन्नाराम वन प्रभागों में फाइटोसोसियोलोजीकल अध्ययन किये गये। मृदा के भौतिकीय तथा रासायनिक गुणों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करने के लिए मृदा नमूनों को विश्लेषित किया गया।

वर्ष 2006-2007 के दौरान जारी की गई परियोजनाएं

परियोजना 1 : आंध्र प्रदेश के सम–शुष्क उष्णकटिबंधी वनों में विभिन्न कृषि वानिकी पद्धतियों की निष्पादकता [एफ आर सी–एक्स–02/ए एफ–01/2002–2007]

स्थिति : टीक + सन्दल, रोजवुड + सन्दल, यूकेलिप्टस + सन्दल और टीक + सन्दल + रोजवुड के स्टेशन परीक्षण स्थापित कर लिये गये हैं और एरण्ड की वर्षा पोषित फसलों के रूप में उगाया गया है। विभिन्न वृक्ष संयोजनों में एरण्ड वृद्धि प्रदर्शन का मानीटन किया गया। सभी वृक्ष प्रजातियों के संयोजनों के साथ हरे चनों, अरहर, ज्वार तथा अरण्डी की एलोपेथिक अन्तः क्रियाओं का अध्ययन किया गया। रोजवुड के संयोजन के साथ सभी कृषि फसलों ने अच्छा निष्पादन किया। अरहर ने इतना अच्छा निष्पादन किया कि सन्दल की वृद्धि नकारात्मक रूप से प्रभावित हो गई।

परियोजना 2 : टेरोकार्पस मार्सूपियम तथा जर्मप्लाज्म संग्रह में वैविध्य का आकलन [एफ आर सी–एक्स–03/टी आई–04/2003–2008]

स्थिति : आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में कई वृक्ष आबादियों और वृक्षों को चिन्हित किया गया। वानस्पतिक उपायों से जर्मप्लाज्म संग्रह की प्रक्रिया शुरू की गई।

परियोजना 3 : घरेलूकरण के लिए लेगेस्ट्रोमिया प्रजातियों की प्राकृतिक आबादी की जांच [एफ आर सी–04/टी आई–एक्स–04/2003–2008]

स्थिति : आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में लेगस्ट्रोमिया की दो प्रजातियों की आबादी का सर्वेक्षण किया गया और कई आबादियों का पता लगाया गया। जर्मप्लाज्म संग्रह (बीज) और बहुगुणन (वानस्पतिक) की प्रक्रिया शुरू की गई है।

परियोजना 4 : आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में लोह' अयस्क और चूना पत्थर खानों से उत्पन्न कचरे का पुनरूद्धार [एफ आर सी–एक्स–05/ई बी–02/2003–2008]

स्थिति : लोह अयस्क खानों के कचरे के मृदा सुधार के लिए उपयुक्त वृक्ष प्रजाति चयन हेतु पौधशाला परीक्षण किये गये।

परियोजना 5 : आंध्र प्रदेश के कपास आधारित कृषि–वानिकी पद्धतियों में कीट आबादियों की गतिशीलता [एफ आर सी–एक्स–06/ई बी–04/ 2003–2008]

स्थिति : बांस (डेन्ड्रोकेलेमस स्ट्रिक्स), यूकेलिप्टिस, नीम, कस्टर्ड एप्पल तथा आंवला के साथ कपास पर कीट आबादी की घटनाओं पर आंकडे एकत्रित किये गये।

यूकेलिप्टस + कपास कृषि वानिकी पद्धति

परियोजना 6 : टेरोकार्पस सन्टेलिनस तथा जर्मप्लाज्म संग्रह पर ऋतु वैविध्य के अध्ययन किये गये [एफ आर सी–एक्स–07/टी आई–01/2003–2008]

स्थिति : आंध्र प्रदेश के कुरनूल तथा चित्तूर जिलों का सर्वेक्षण किया गया और जर्मप्लाज्म संग्रह के लिए कुछ वृक्षों की पहचान की गई।

सर्दी के मौसम में पोलीग्लोब्यूल अवस्थाओं में टेरोकार्पस संटालीनस की तना कर्तनों की मूलोत्पत्ति

परियोजना 7 : वृक्ष सुधार के लिए रोजवुड (डलबर्जिया लेटीफोलिया राक्सब) पर प्राकृतिक वैविध्य अध्ययन [एफ आर सी–एक्स–08/टी आई/2003–2008]

स्थिति : आंध्र प्रदेश और कर्नाटक के विभिन्न भागों में धन वृक्षों को चिन्हित किया गया। जर्मप्लाज्म संग्रह की प्रक्रिया शुरू की गई है।

वर्ष 2006-2007 के दौरान पूरी की गई परियोजनाएं (बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1 : मृदा, भौतिकीय, रासायनिक गुणों पर यूकेलिप्टस कृन्तकीय रोपणियों का प्रभाव

उपलब्धियां : परियोजना पूर्ण कर ली गई है और आई टी सी भद्रचलम को रिपोर्ट दी गई है, जो परियोजना के प्रायोजक थे।

वर्ष 2006-2007 के दौरान जारी की गई परियोजनाएं (बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1 : शहरी वनों में जैव मात्रा आकलन और कार्बन पृथक्करण। एच यू डी ए द्वारा निधिकृत [2005–2006]

स्थिति : एक प्रतिशत नमूना गहनता पर शहरी वानिकी में रोपण के लिए भूमि के भीतर और बाहर जैव मात्रा आकलन किया गया। शहर के विभिन्न भागों से प्रदूषण स्तरों को एकत्र किया गया और संबंधित जैव मात्रा को रिकार्ड किया गया। प्रदूषण स्तर को न्यूनतम करने के लिए आवश्यक जैव मात्रा का अनुमान लगाया गया।

परियोजना 2 : कर्नाटक के पश्चिमी घाटों में वन कार्बन पूल्स का आकलन–वृहत वन किस्मों के लिए जैव मात्रा विस्तार कारकों का विकास। एन आर एस ए द्वारा निधिकृत [2004–2007]

स्थिति : 1 हे. भूखण्ड में आर्द्र प्रर्णपाती वनों में भूमि के भीतर और बाहर जैव मात्रा का आकलन किया गया। प्राप्त आंकडो के आधार पर विस्तार कारकों को विकसित किया गया। झाड़ी जैव मात्रा, पर्ण पतन और फ्लोर मात्रात्मकता का पता लगाया गया।

एन आर एस ए सहयोगी परियोजना में
कार्बन पूल परियोजना में भूगर्भीय जैवमात्रा आकलन

वर्ष 2006-2007 के दौरान शुरू की गई नई परियोजनाएं (बाहर से सहायता प्राप्त)

परियोजना 1 : आंध्र प्रदेश में एन एस पी बी द्वारा निधिकृत औषधीय पादपों के लिए बहुस्तरीय फ्यूल मॉडल का विकास [2006–2007]

स्थिति : परियोजना में नीम, सेन्ना, चन्दन, आंवला, तुलसी, खलिहारी, सतवार, मोमोरिडिका डायओका आदि प्रजातियों को छः हे. रोपण में स्थापित किया गया। आंध्र प्रदेश और कर्नाटक के विभिन्न भागों से एस्प्रागस जर्मप्लाज्म एकत्र किये गये। इसी प्रकार बड़े स्तर पर खेती के लिए ओसीमम सैक्टम तथा विथानिया सोम्नीफेरा को संग्रहित किया गया।

परियोजना 2 : आंवला (इम्बलिका आफिसीनेलिस गार्टन) के नाशिकीटों का जैव पारितंत्रीय अध्ययन और समग्र प्रबंधन। एन एम पी बी द्वारा निधिकृत [2006–2007]

स्थिति : हैदराबाद, राजामुन्द्री तथा नन्दयाल (आंध्र प्रदेश) में नाशिकीटों के प्रकोप पर आंकडों को रिकार्ड किया जा रहा है। उपज में कमी पर अध्ययन हेतु प्रयोग प्रारम्भ किये गये।

	2006–2007 में पूरी की गई परियोजनाओं की संख्या	2006–2007 में जारी परियोजनाओं की संख्या	2006–2007 में शुरू की गयी परियोजनाओं की संख्या
प्लान परियोजना	1	7	-
बाहरी परियोजनाएं	1	2	2
योग	**2**	**9**	**2**

परामर्श

1. आंध्र प्रदेश के एफ डी ए के लिए वारंगल, नजीमाबाद तथा मेडक जिलों में राष्ट्रीय वनीकरण कार्यक्रम के अंतर्गत पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा प्रायोजित मानीटरिंग और मूल्यांकन कार्य को इस केन्द्र द्वारा निष्पादित किया गया।
2. नागार्जुन श्रीसेलम बाघ रिजर्व तथा वन्य जीवों पर महात्मा गांधी (कलवाकृती) लिफ्ट सिंचाई परियोजना, एकाम्पेट वन्यजीव प्रभाग, जिला महबूब नगर में वन क्षेत्र परिवर्तन के कारण हुए प्रभाव का आकलन किया गया।
3. सिंगरेनी कोलीरीज् कम्पनी लिमिटेड, आंध्र प्रदेश द्वारा कोयागुदेम ओपनकास्ट परियोजना के तहत वन भूमि परिवर्तन के कारण वनस्पति एवं जीव जन्तुओं की वर्तमान स्थिति तथा जीव जन्तु एवं वनस्पतियों पर संभावित प्रभाव का आंकलन किया गया।
4. एफ डी ए गन्टूर, गिद्दालुर, वेल्लाम्पेली, कागज नगर, पलोंका, मार्कापुर, तिरूपति तथा राजम्पेट (आंध्र प्रदेश) के मध्यावधि मूल्यांकन को एन ए ई बी, नई दिल्ली द्वारा अनुमोदित किया गया।

सम्मेलन/बैठकें/कार्यशालायें/सेमीनार/संगोष्ठी/प्रदर्शनियां

डॉ. जी आर एस रेड्डी ने, राज्य वन संवर्धकों द्वारा आंध्र प्रदेश अकादमी में 23 मार्च को आयोजित अन्तः सक्रिय तकनीकी सत्र में भाग लिया और आंध्र प्रदेश वन अकादमी डुलापैली, हैदराबाद में ''वृक्ष सुधार और पोंगामिया पिन्नाटा के संवर्धन पहलुओं'' पर वार्ता की।